एमा0पी0ए0एम0–101

संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र

भारतीय संगीत वाद्यों का वर्गीकरण

- वाद्यों की उत्पत्ति
- वाद्यों की उपयोगिता
- वाद्यों की विकास
- वाद्यों का वर्गीकरण

वाद्यों की उत्पत्ति

भारतीय संगीत में वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। वाद्यों के विषय में कुछ भी प्रमाणिक रूप से कहा नहीं जा सकता कि उनकी उत्पत्ति कब, कैसे और कहा हुई, लेकिन विद्वानों का यह मानना है कि भारतीय वाद्यों का प्रयोग गायन के साथ–साथ ही हुआ होगा। प्राचीन ग्रन्थों व अन्य तथ्यों से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि प्राचीन काल से भारतीय संगीत में वाद्यों का प्रयोग होता आया है।

वद् धातु से वाद्य की रचना हुई है जिसका अर्थ है वाणी। जहाँ वाणी न पहुँच पाई होगी वहाँ वाद्य का प्रयोग हुआ होगा। ऐसा माना जाता है कि दूर तक संदेश देने अथवा ध्यान आकृष्ट करने के लिए वाणी के अतिरिक्त, वाद्यों का प्रयोग प्रारंभ से हुआ होगा। कण्ठ या वाणी के स्थान पर इस सम्बन्ध में विभिन्न वाद्यों जैसे शंख, ढोल, नगाड़े आदि का प्रयोग होने लगा। वैदिक काल मे शंख, बांसुरी, वीणा, डमरू, दुदुंभि, मृदंग, ढोल आदि वाद्यों के प्रयोग का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। धार्मिक मान्यतानुसार वाद्यों की उत्पत्ति का संबंध देवी–देवताओं के साथ माना गया है।

वाद्यों के संबंध में कई मान्यताएं हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- धार्मिक मान्यतानुसार भगवान शिव का डमरू से, सरस्वती का वीणा से, कृष्ण का मुरली से, नारद का वीणा से संबंध का वर्णन मिलता है।
- दूसरी मान्यतानुसार आदि मानव अपने भावों, इच्छाओं आदि को व्यक्त करने के लिए इशारे या अपने चेहरे के भावों का प्रयोग करता होगा। कालान्तर में अपनी आवाज या अपने आस–पास की वस्तुओं को पीटकर उसकी आवाज से अपने भावों को व्यक्त किया होगा। इन ध्वनियों को प्रयोग करने से ही इनका महत्व अस्तित्व में आया होगा। विकास क्रम में कण्ठ ध्वनि को प्रकृति में व्याप्त ध्वनि के अनुरूप समझ कर उसका विकास हुआ। इसके साथ–साथ ही विकास क्रम में आवश्यकतानुरूप वाद्य भी विकसित हुए होंगे।

वाद्यों की उत्पत्ति संबंधी कुछ प्रचलित प्राचीन धार्मिक व लोक गाथाएं निम्नलिखित हैं:

- एक लोक गाथा के अनुसार मानव को चार प्रकार के वाद्य, तुर्याग(पृथ्वी पर उपस्थित दस कल्पवृक्षों में से एक) द्वारा प्रदान किए गए।
- भारतीय मान्यतानुसार हमारे प्राचीन वाद्यों का निर्माण व नामकरण किसी देवता/देवी से संबंधित है। एक धार्मिक कथानुसार दक्ष–यज्ञ विध्वंस हेतु उत्पन्न शिव के क्रोध को शान्त करने के लिए स्वाति, नारद आदि ऋषियों द्वारा वाद्य निर्मित किए गए।
- एक अन्य धार्मिक कथानुसार, त्रिपुरासुर विजय पर शिव के नृत्य के साथ संगत के लिए ब्रह्मा द्वारा अवनद्ध वाद्य मृदंग का निर्माण किया गया।
- पौराणिक मान्यता है कि देवताओं से तत् वाद्य, गंधर्वों से सुषिर वाद्य, राक्षसों से अवनद्ध वाद्य तथा किन्नरों से घन वाद्य का संबंध है तथा श्रीकृष्ण के अवतार के बाद यह चार प्रकार के वाद्य पृथ्वी पर आए।

वाद्यों की उपयोगिता

- संगीत में वाद्यों का बहुत महत्व है। प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार के वाद्यों जैसे शंख की ध्वनि, वेणु, वीणा, दुन्दुभी, मृदंग आदि का प्रयोग होता आया है। गायन व नृत्य में वाद्यों के प्रयोग से इनका आकर्षण व सौन्दर्य अधिक व पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है। इस कारण गायन व नृत्य के साथ संगत के रूप में वाद्यों की उपयोगिता को समझते हुए विद्वानों द्वारा इनका निर्माण, इनमें संशोधन, प्रयोग एवं विकास किए गए।
- सामवेद से संगीत का उद्‌गम माना जाता है इस कारण इसे संगीत का प्रथम ग्रन्थ भी कहा गया है। वैदिक काल में संगीत की तीन महत्वपूर्ण इकाईयां थी –

- 1. मंत्रोच्चारण जिसमें स्वरों का प्रयोग होता था।
- 2. उन्नत वाद्य संगीत तथा
- 3. देवताओं की आराधना में नृत्य का समावेश।

- प्राचीन काल से ही संगीत के अन्तर्गत गायन को प्रमुखता प्राप्त है, किन्तु इससे वाद्यों का महत्व कम नहीं माना जाता है। संगीत में वाद्यों की उपयोगिता निरन्तर महत्वपूर्ण रही है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वादन करने वाले वाद्य विशेषज्ञ अपनी अन्तर्निहित कला की प्रायोगिकता से गायन तथा नृत्य का सौन्दर्यवर्द्धन करता है, जिससे कला–प्रदर्शन का ध्येय पूरा होता है। विद्वानों का मत है कि तंत्र व सुषिर वाद्य अपनी स्वर प्रधान क्षमता का प्रदर्शन करता है तथा अवनद्ध व घन वाद्य लय को बांध कर सौन्दर्य की अभिवृद्धि करता है।
- संगीत की तीनों विधाएं गायन, वादन व नृत्य वाद्याश्रित हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत में वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है।

वाद्यों का विकास

- संगीत की विधाओं में पूर्णता प्राप्त करने में वाद्यों का प्रयोग, महत्वपूर्ण एवं सक्षम माना जाता है। समय के विकास क्रम में विद्वान संगीतज्ञों ने वाद्यों की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए प्राचीन तंत्र, सुषिर एवं घन वाद्यों की सरंचना में आवश्यकतानुरूप परिवर्तन किया, जिससे संगीत की विधाओं को और अधिक परिमार्जित व परिष्कृत रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

संगीत के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ वाद्यों की संरचना, संख्या आदि में निरन्तर विकास होता रहा है। जैसे प्राचीन वाद्य रूद्र वीणा (प्राचीन मान्यतानुसार शिव ने पार्वती की शयन मुद्रा को देखकर रूद्रवीणा का निर्माण किया) का विकास हुआ। इसी प्रकार तत् वाद्यों के कई प्रकार जैसे–विचित्र वीणा, अन्य वीणा से निर्मित सुरबहार, सितार, सरोद, मोहनवीणा आदि वर्तमान में प्रचलन में हैं। इसी प्रकार सुषिर वाद्यों में बाँसुरी, शहनाई, नादेश्वरम आदि वाद्य, अवनद्ध वाद्यों में मृदंग, पखावज, तबला, नगाड़ा इत्यादि वाद्य तथा घन वाद्यों में भी विकास क्रम देखने को मिलता हैं।

- समय के साथ–साथ वाद्यों की संरचना, वादन शैली आदि में भी विकास हुआ। ऐसे देखने को मिलता है कि संरचना व वादन शैली में क्लिष्ट वाद्यों का अभाव होता रहा तथा उनके स्थान पर परिवर्तित नए वाद्य प्रचलन में आए। उदाहरणार्थ–रूद्रवीणा का निर्माण कम व सितार का निर्माण अधिक संख्या में हो रहा है तथा सितार वादकों की संख्या भी अधिक है। यही स्थिति पुराने सुषिर, अवनद्ध व घन वाद्यों की भी है। प्राचीन अवनद्ध वाद्यों के स्थान पर वर्तमान में तबला अधिक प्रचलित है।
- प्राचीन काल में वीणा के अनेक प्रकार जैसे 'महती, पिनाकी, कत्यायनी, रावणी, मत कोकिला–औदुम्बरी, घोषवती, सैरंध्री–जया–ज्येष्ठा, कच्छपी, कुन्जिका आदि प्रचलित थे। वीणा की बनावट, आकार–प्रकार, तन्त्रिकाओं की संख्या आदि के हिसाब से उस समय में वीणा के अनेक प्रकार जैसे–शततंत्री वीणा, कांड वीणा, पिन्छोला, कर्कटिका, अलाबु, विकसित हुए। किन्तु वर्तमान में वीणा के स्थान पर कई अन्य तत् वाद्य या कहें कि उनके विकसित रूप प्रचलित हैं।

वाद्यों का वर्गीकरण

वाद्यों के विभिन्न प्रकारों के अध्ययन हेतु इनके वर्गीकरण की आवश्यकता अनुभव होने पर, विद्वानों ने वाद्यों का वर्गीकरण किया। वाद्यों का वर्गीकरण को लेकर विद्वानों के विभिन्न मत हैं:–

- कोहल के मतानुसार वाद्य के पाँच प्रकार हैं। यथा :–

  पंचधा च चतुर्धा च त्रिविधं च मते मते।
  कोहलस्य मते ख्यातं पंचधा वाद्यमेव च।।

  (संगीत चूड़ामणि, बड़ौदा संस्करण, पृष्ठ 69)

- नारद मुनि ने वाद्यों के तीन वर्ग –आनद्ध, तत एवं घन माने हैं। यथा :–

  नारदमते चार्मणं तान्त्रिकं घनं त्रिधा वाद्यलक्षणम्।

  (भरतकोष, द्र. संगीत चूड़ामणि, बड़ौदा संस्करण, पृष्ठ 69)

- दत्तिल मुनि ने वाद्य के चार वर्ग–आनद्ध, तत्, घन व सुषिर माने हैं :–

  दत्तिलेन तु आनद्धं ततं घन सुषिर चेति चतुर्विध वाद्य कीर्तितम्।

- महर्षि भरत ने भी वाद्यों के चार वर्ग माने हैं :–

भरतेन वाद्यं चतुर्विधं प्रोक्तम। ***(द्र. संगीत चूड़ामणि, बड़ौदा संस्करण, पृष्ठ 69)***

भरत ने वाद्यों को आतोद्य कहा गया तथा इसके चार प्रकार–तत्, सुषिर, अवनद्ध व घन का वर्णन किया है।

ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च।

चतुर्विधंतु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम्।। **नाट्यशास्त्र 28/1**

भरत ने वाद्यों के लक्षणों को के विषय में कहा है –

ततं तन्त्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्।

घनं तालस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश उच्यते।। **नाट्यशास्त्र 28/2**

अर्थात् तत–तंत्री वाद्य, अवनद्ध–पुष्कर वाद्य, घन–ताल वाद्य तथा सुषिर–वंशी वाद्य कहे जाते हैं।

- प्राचीन काल से वर्तमान तक जितने विद्वानों ने भी वाद्य वर्गीकरण किया उनमें से महर्षि भरत का वर्गीकरण सर्वथा उचित तथा पर्याप्त प्रतीत होता हैं। उसका मुख्य कारण है कि भरत का वर्गीकरण वाद्य की संरचना के आधार पर ना होकर वाद्य की वादन क्रिया पर आधारित है। उक्त कारण से महर्षि भरत का वर्गीकरण मौलिक कहा जाता है।
- वाद्यों के विषय में अभिनव गुप्त का कथन है कि स्वर के लिए तत् व सुषिर वाद्यों का प्रयोग तथा ताल के लिए अवनद्ध व घन वाद्यों का प्रयोग होता है।

- नारद कृत संगीत मकरन्द में वर्णित है :–

अनाहतः आहतश्चेति द्विविधो नादस्तत्र।

सोऽप्याहतः पंचविधो नादस्तु परिकीर्तितः।

नखवायुजचर्माणि(चर्मण्य) लौहशारीरजास्तथा।।

(संगीत मकरन्दे, द्र. संगीत चूड़ामणि, बड़ौदा संस्करण, पृष्ठ 69)

अर्थात नाद के दो प्रकार हैं–अनाहत और आहत। नाद पाँच ध्वनि–रूपों में प्रस्फुटित होता है जिन्हें हम संगीतात्मक ध्वनियाँ कहते हैं। ये ध्वनियाँ नखज, वायुज, चर्मज, लोहज तथा शरीरज होती हैं। वीणा आदि वाद्य नखज वाद्यों की श्रेणी में आते हैं, वंशी आदि वाद्य वायुज की श्रेणी में, मृदंग आदि वाद्य चर्मज की श्रेणी में, मंजीरा आदि वाद्य लोहज की श्रेणी में तथा कंठ ध्वनि शरीरज की श्रेणी में आती है।

- संगीत रत्नाकर में चार प्रकार के वाद्यों का वर्णन है :–

  शुष्कं गीतानुगं नृत्यानुगमन्यद द्रयानुगम्।

  चतुर्धेति मतं वाद्यं तत्र शुष्कं तदुच्यते।

  यद्धिना गीत नृत्ताभ्यां तद्गोष्टीत्युच्यते बुधैः।।

- **शुष्क** – ऐसे वाद्य जो स्वतंत्र वादन के रूप में प्रयोग होते हैं।
- **गीतानुग** – ऐसे वाद्य जो गायन में संगत के लिए प्रयुक्त होते हैं।
- **नृत्यानुग** – वे वाद्य जो नृत्य की संगत के लिए प्रयोग होता है।
- **द्रैयानुग** – वे वाद्य जो गायन व नृत्य दोनों की संगत के लिए प्रयुक्त होते हैं।

वर्तमान में जो वाद्य वर्गीकरण सर्वमान्य है उसके अन्तर्गत वाद्यों को चार वर्ग में विभाजित किया गया है –

- तत वाद्य
- सुषिर वाद्य
- अवनद्य वाद्य एवं
- घन वाद्य।

सुषिर और तत वर्ग के अधिकतर वाद्य स्वरगत तथा अवनद्ध व घन वर्ग के अधिकतर वाद्य ताल प्रधान हैं।

तत् वाद्य

तत् वाद्य ऐसे वाद्य होते हैं जिनमें धातु की तारें लगी होती हैं। ऐसे वाद्यों में नाद अंगुलियों या किसी अन्य वस्तु के प्रयोग से उत्पन्न की जाती है। विद्वानों ने वादन पद्धति के आधार पर तत् वाद्यों को चार उपवर्गों में भी बांटा गया है :–

- अंगुलियों से बजाए जाने वाले तत् वाद्य – जैसे तानपूरा, स्वर मण्डल आदि।
- मिजराब (कोण या त्रिकोण), जवा आदि से बजाए जाने वाले तत् वाद्य – जैसे सितार, सरोद, तंजौरी वीणा, मोहन वीणा (गिटार), रूद्रवीणा आदि।
- गज(बो) या कमानी से बजाए जाने वाले तत् वाद्य – जैसे वायलिन(बेला), सारंगी, इसराज, दिलरूबा आदि।
- लकड़ी की से बजाए जाने वाले तत् वाद्य – जैसे सन्तूर, कानून आदि।

सितार

सरोद

रूद्रवीणा

सितार

वायलिन

सन्तूर

सुषिर वाद्य

सुषिर वाद्य वे वाद्य होते हैं जिनमें नाद की उत्पत्ति वायु के प्रयोग से होती है। सुषिर वाद्यों में कुछ छिद्र होते हैं, जिनमें वायु के प्रवेश एवं निकास से नाद उत्पन्न होता है। जैसे वंशी, मुरली, शहनाई, नागस्वरम्, हारमोनियम आदि। सुषिर वाद्य बॉस, हाथी दांत, लोहे, काँसे आदि वस्तुओं से निर्मित होते हैं। भरतकालीन वाद्यवृन्द में वंशी का मुख्य स्थान होता था।

वादन पद्धति के अनुसार सुषिर वाद्यों को दो उपवर्गों में विभाजित किया गया है:–

- मुँह से फूँककर बजाए जाने वाले सुषिर वाद्य – जैसे वंशी, मुरली, पाविका, पुंगी, शहनाई, नागस्वरम् आदि।
- कृत्रिम साधन जैसे धमनी से वायु द्वारा ध्वनि उत्पन्न करके बजाए जाने वाले सुषिर वाद्य – जैसे हारमोनियम, स्वरपेटी आदि।

बांसुरी

शहनाई

हारमोनियम

अवनद्य वाद्य

अवनद्य वाद्य वे वाद्य होते हैं जो किसी धातु या लकड़ी के पात्र को चमड़े से मढ़ कर बने हुए हों। ऐसे वाद्यों में नाद की उत्पत्ति हाथ या किसी अन्य वस्तु के आघात से उत्पन्न होती है। वादन पद्धति के अनुसार विद्वानों ने अवनद्ध वाद्यों को पांच उपवर्गों में विभाजित किया गया है :–

- दोनों हाथों की उंगुलियों या पंजों से बजाए जाने वाले अवनद्य वाद्य–जैसे मृदंग, पखावज, तबला, ढोलक, खोल, नाल, मादल आदि।
- एक हाथ की अंगुलियों से बजाए जाने वाले अवनद्य वाद्य–जैसे हुडुक्का, खंजरी, ढपली आदि।
- शंकु की सहायता से बजने वाले अवनद्य वाद्य–जैसे नगाड़ा, धौसा, दमामा आदि।
- एक ओर डण्डी तथा दूसरी ओर हाथ से बजने वाले अवनद्य वाद्य–जैसे बड़ा ढोल, पटह आदि।
- घुण्डी के प्रहार से बजने वाले अवनद्य वाद्य–जैसे डमरू, ढक्का आदि।

तबला

पखावज

मृदंग

हुडुक्का

डमरू

नगाडा

घन वाद्य

घन वाद्य वे वाद्य होते हैं जो ठोस धातु के बने होते हैं तथा इन्हें आपस में टकराकर नाद उत्पन्न किया जाता है। वादन पद्धति के आधार पर विद्वानों ने घन वाद्यों को मुख्यतः तीन उपवर्गों में विभाजित किया है–

- एक समान दो हिस्सों को आपस में टकराकर नाद उत्पन्न करने वाले घन वाद्य–जैसे झाँझ, मंजीरा, कठताल क्रमिका आदि।
- किसी डण्डी, लकड़ी या किसी अन्य मुलायम वस्तु से बनी हथौड़ी के प्रहार से बजाए जाने वाले घन वाद्य – जैसे घण्टा, जयघण्टा, विजयघण्ट, गाँग, गेमलन, बड़ी झाँझ आदि।
- हाथ से हिलाकर बजाए जाने वाले घन वाद्य – इस उपवर्ग के अन्तर्गत ऐसे वाद्य आते हैं जिनमें किसी पदार्थ के खोखले आकार के अंदर कंकड़ आदि भरा रहता है। जैसे झुनझुना, रम्भा आदि।

जलतरंग

मजीरा